Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 694–702

आधुनिक भारत के बदलते सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश का विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन

कविता रुस्तगी[1], डॉ. नाहिद परवीन[2]

[1]शोधार्थी, श्री वेंकटेश्वरा यूनिवर्सिटी, गजरौला, उत्तर प्रदेश
[2]शोध निर्देशिका, श्री वेंकटेश्वरा यूनिवर्सिटी, गजरौला, उत्तर प्रदेश

ABSTRACT

भारत एक प्राचीन सभ्यता का वाहक रहा है, जिसकी नींव नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक विचारों पर टिकी हुई है। सदियों से यह देश अपनी उच्च नैतिक मूल्यों से युक्त शिक्षा प्रणाली के लिए जाना जाता रहा है, परंतु पिछले कुछ दशकों में, भारत में शैक्षणिक क्षेत्र और विद्यार्थियों के जीवन में एक तीव्र परिवर्तन देखा गया है, जो पाश्चात्य संस्कृति, आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति के प्रभाव का परिणाम है, जिनके कारण उनके जीवन के नैतिक मूल्य प्रभावित हो रहे हैं। आज 21 वीं शताब्दी में उच्च सूचना तकनीकी के बढ़ते प्रभाव के कारण शिक्षा की पारंपरिक अवधारणाएं परिवर्तित हो रही हैं। वर्तमान में विद्यार्थियों के जीवन में नैतिक मूल्यों के लोप की समस्या पूर्णतया दृष्टिगोचर हो रही है। विद्यार्थियों के जीवन में विनम्रता, सत्यनिष्ठा, सदाचार, प्रेम, परोपकार, अनुशासन, सहिष्णुता और अहिंसा जैसे नैतिक गुणों में निरंतर गिरावट एक चिंता का विषय है। अतः इस विषय पर गहन अध्ययन करना अत्यंत सामयिक है। इस समस्या के निराकरण तथा नैतिक शिक्षा के पुनरुत्थान हेतु भारत सरकार द्वारा 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' का निर्माण किया गया है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित है तथा शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, विश्वासों, आदर्शों और आवश्यकताओं को आत्मसात किए हुए है। 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' आधुनिक शिक्षा के सभी कमजोर पक्षों में सुधार एवं नैतिक शिक्षा के पुनर्गठन के लिए प्रतिबद्ध है।

Keywords: आधुनिक भारत, समाज, संस्कृति, परिवेश, परिवर्तन, शिक्षा नीति, विद्यार्थी और नैतिक मूल्य

CorrespondingAuthor
कविता रुस्तगी
kavitarustagi59@yahoo.co.in

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.4274

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

एथिक्स (Ethics) शब्द ग्रीक शब्द एथिकोस (Ethikos) से बना है, जिसकी उत्पत्ति लैटिन शब्द एथोस (Ethos) से हुई है, जिसका हिंदी में अनुवाद नैतिकता है। नैतिकता का अर्थ अच्छा चरित्र, अच्छी आदतें, शिष्टाचार और रीतिरिवाज इत्यादि है। सदियों से हमारा देश भारत अपनी समृद्ध संस्कृति, विविधता में एकता और उच्च नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण शिक्षा प्रणाली के लिए विश्वविख्यात रहा है। प्राचीन भारत में गुरुकुलों में बच्चों को बचपन से ही नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी। भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे विश्वविद्यालय थे जहां विश्वभर से विद्यार्थी उच्च शिक्षा और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए आते थे। भारतीय संस्कृति और दर्शन की समृद्ध विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए शिक्षा के माध्यम से संरक्षित रखना अनिवार्य है। शिक्षा मानव जीवन की प्रगति की प्रथम सीढ़ी है। मानव जाति का संपूर्ण विकास शिक्षा के द्वारा ही संभव हुआ है। शिक्षा ही बच्चों को बुद्धिमान बनाती है। शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को भावी जीवन के लिए तैयार करना होता है। शिक्षा बच्चों की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक क्षमताओं का विकास करती है, जिससे वे समाज का एक सक्रिय, योग्य और उत्तरदायी नागरिक बन सकें और आगामी जीवन में आने

वाली कठिनाइयों का सफलतापूर्वक सामना और समाधान कर सकें। जन्म के समय बच्चे का मन एकदम पवित्र और कोरे कागज जैसा होता है, उस समय परिवार, शिक्षकों और समाज द्वारा जो संस्कार उसे दिए जाते हैं वह जीवनपर्यन्त उसका साथ देते हैं। बचपन से ही यदि विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती है तो उनके मन में सत्य, न्याय, प्रेम, परोपकार, दया, अहिंसा, देश–प्रेम, त्याग, बलिदान और अनुशासन जैसे विचार घर कर लेते हैं और वह हमेशा उनके आदर्श बने रहते हैं। वह विद्यार्थी जीवन भर नैतिक मूल्यों को सर्वोच्च सम्मान देता है, लेकिन आधुनिक भारत के समकालीन परिवेश में विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का स्तर निरंतर कम हो रहा है। इसका प्रमुख कारण वर्तमान समय में परिवार और शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों की शिक्षा पर कम जोर देना है। इसके अतिरिक्त आधुनिकीकरण, पाश्चात्य संस्कृति और सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग ने भी विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों को प्रभावित किया है।

2. संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन –

नैतिक शिक्षा की आवश्यकता पर विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने मत प्रकट किए हैं। नैतिक शिक्षा की अनिवार्यता पर कुछ पूर्व शोध अध्ययनों के निष्कर्ष इस प्रकार है :–

1. **एस. के. राजपूत (2023)** ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया है कि युवा देश के भविष्य के लिए जिम्मेदार होते हैं। युवाओं को राष्ट्र की शक्ति और प्रेरक शक्ति माना जाता है। नैतिक मूल्य वर्तमान में हमारी युवा पीढ़ी के बीच गिरावट पर हैं। सही और गलत के बीच अंतर करने के लिए जिन महान आदर्शों या नियमों का पालन किया जाता है, उन्हें नैतिक मूल्य कहा जाता है। आज के युवा विभिन्न अनैतिक गतिविधियों की ओर नकारात्मक रूप से आकर्षित हो रहे हैं, इसलिए यह हर किसी की जिम्मेदारी है कि वे इन महत्वपूर्ण मुद्दों को समझें जो अगली पीढ़ी के हाथों में हैं।
2. **एम. वी. ढोले एवं अन्य** (2022) ने अपने शोध पत्र में मुख्य रूप से शिक्षा में नैतिक मूल्यों, आचार–विचार और चरित्र के महत्व को प्रस्तुत किया है, साथ ही छात्रों के चरित्र निर्माण की आवश्यकता को भी। लेखक आधुनिक युग में छात्र जीवन में दिन–प्रतिदिन घटते नैतिक मूल्यों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों की जांच करते हैं। प्रौद्योगिकी, तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण सामाजिक जीवन की जटिलताओं में योगदान दे रहे हैं। इस पत्र का उद्देश्य नैतिक शिक्षा के लिए एक शिक्षण और सीखने के मॉडल के रूप में एक समुदाय–आधारित परियोजना को लागू करने का प्रस्ताव करना है। नैतिक मूल्य पाठ्यक्रम और शिक्षक के व्यवहार में बारीकी से मिश्रित होते हैं। वर्तमान परिदृश्य में जहाँ हम रहते हैं, समाज भौतिक लाभ और मुनाफे को सबसे ऊपर रखता है। यह पत्र इंगित करता है कि छात्र जीवन के विकास में नैतिक शिक्षा कितनी महत्वपूर्ण है।
3. **पी. बंसल (2022)** ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया है कि आज की दुनिया में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बहुत सारे विकास हुए हैं। इन प्रगतियों ने समाज को बेहतर बनाया है, लेकिन कभी–कभी इनका समग्र विकास पर प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ता है। अतः समाज को होने वाले नुकसान को कम करने के लिए विशिष्ट क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। इनमें से एक महत्वपूर्ण क्षेत्र "मूल्य शिक्षा" का अध्ययन है। मूल्य शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास के लिए अपरिहार्य है। वैश्वीकरण के इस वर्तमान युग में मूल्य शिक्षा को लागू करना आवश्यक है।
4. **डॉ. के. ए. सिंह (2020)** ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया है कि किसी भी देश का भविष्य युवाओं के कंधों पर टिका होता है। युवाओं को देश की प्रेरक शक्ति और शक्ति का इंजन माना जाता है। वर्तमान में हमारी नई पीढ़ी में नैतिक मूल्यों की प्रवृत्ति कम होती जा रही है। आजकल के युवा विभिन्न अनैतिक गतिविधियों की ओर आकर्षित हो रहे हैं, इसलिए यह सभी का कर्तव्य है कि वे इस महत्वपूर्ण समस्या का समाधान खोजें।
5. **डी. के. भक्त (2017)** ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया है कि युवा पीढ़ी में नैतिक मूल्यों का ह्रास भारत में एक महत्वपूर्ण समकालीन मुद्दा है। नैतिकता का अर्थ है किसी व्यक्ति के कार्य, विचार या भावना की अच्छाई की उपयुक्तता। युवा पीढ़ी किसी राष्ट्र की प्रेरक शक्ति होती है। लेकिन आजकल युवा पीढ़ी को विभिन्न अनैतिक गतिविधियों जैसे धूम्रपान, शराब पीना, अपशब्द बोलना, झगड़ा करना, यौन शोषण आदि के माध्यम से प्रतिकूल रूप से भटकाया जा रहा है। इसलिए यह सभी का कर्तव्य है कि वे इस महत्वपूर्ण समस्या का समाधान खोजें ताकि भारत को शांति और सद्भाव की दुनिया में स्थापित किया जा सके जो कि युवा पीढ़ी पर बहुत अधिक निर्भर है। लेखक के अनुसार इस समस्या का सामना काफी हद तक मूल्य आधारित शिक्षा के माध्यम से किया जा सकता है।

3. शोध समस्या का चयन –

आज हमारा समाज नैतिक पतन के दौर से गुजर रहा है। शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को सभ्य, सुसंस्कृत, समझदार और जिम्मेदार नागरिक बनाना होता है, लेकिन जब हमारे शिक्षित समाज का एक वर्ग अपहरण, हत्या, लूट, दुष्कर्म, चोरी और ठगी जैसे जघन्य अपराधों में शामिल होता है, तब हम सोचने को मजबूर हो जाते हैं कि हमारी शिक्षा प्रणाली में मानवीयता, संवेदना, दया, विनम्रता, ईमानदारी और अनुशासन जैसे नैतिक मूल्यों की शायद कमी है और संभवतः इसी कारण उच्च शिक्षित होने का दम भरने वाले हमारे समाज में निर्दयता और लालच के भाव हावी होते जा रहे हैं। हम रोज बच्चों और महिलाओं के शोषण, रिश्तों में अलगाव, भ्रष्टाचार, ठगी, चोरी और हत्या जैसी खबरों से स्वयं को व्यथित पाते हैं। अपराध रोकने के लिए सजा के सख्त कानूनों के प्रावधान के बावजूद समाज में अपराध रुकने के बजाय बढ़ रहे हैं। इस स्थिति की समीक्षा करने के लिए आधुनिक परिवेश और सूचना तकनीक का विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर प्रभाव के कारणों का अध्ययन करना आवश्यक है। अतः इस विषय पर गहन अध्ययन करने के लिए प्राथमिक आंकड़ों और सहायक आंकड़ों का संकलन और समीक्षा करके समकालीन भारतीय समाज में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर प्रभाव डालने वाले कारणों और उनके समाधानों को जानने का प्रयास किया है ताकि विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करने में मदद मिल सके और सामाजिक जीवन को आधिकाधिक सुखमय बनाया जा सके।

अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र दिल्ली एवं गाजियाबाद महानगर है। दिल्ली, आधिकारिक तौर पर भारत राष्ट्र की राजधानी है और एक केंद्र–शासित प्रदेश भी है। गाजियाबाद, भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश का एक महानगर और दिल्ली एनसीआर का एक हिस्सा है।

शोध परिकल्पना

शोध परिकल्पना आधुनिक भारत के बदलते सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश का विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर प्रभावों को उजागर करने से संबंधित है। शोध पत्र का शीर्षक ही शोध परिकल्पना और शोध प्रश्न है।

अनुसंधान की समयावधि

अगस्त 2023 – मार्च 2024

4. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के जीवन में नैतिक मूल्यों के स्तर की जाँच के लिए दिल्ली एवं गाजियाबाद महानगर के 150 परिवारों से विभिन्न आयु वर्ग के 150 प्रतिभागियों को शामिल किया गया था। प्राथमिक तथ्यों के संकलन के लिए गुणात्मक शोध विधि का उपयोग किया गया है तथा साक्षात्कार द्वारा प्रस्तुत शोध विषय पर जानकारी प्राप्त करने के लिए संरचित साक्षात्कार अनुसूची प्रविधि का उपयोग किया गया है। शोध विषय के विश्लेषणऔर समीक्षा के लिए द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से प्राप्त सामग्री का भी उपयोग किया गया है।

संरचित साक्षात्कार अनुसूची में निम्नलिखित प्रश्नों को शामिल किया गया था तथा इन सभी प्रश्नों के उत्तर के लिए 3 विकल्प निर्धारित किये गए थे – (क) हाँ, (ख) नहीं और (ग) पता नहीं :–

1. क्या वर्तमान शैक्षणिक संस्थानों का बदलता सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों को प्रभावित कर रहा है ?
2. क्या अतीत की तुलना में आज की प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा में नैतिक मूल्यों पर कम जोर दिया जा रहा है ?
3. क्या आधुनिक समय में विद्यार्थियों में शिष्टाचार, संस्कार एवं नैतिकता संबंधी ज्ञान प्रदान करने में परिवार, विद्यालय और समाज की भूमिका कम होती जा रही है ?
4. क्या समकालीन समाज में अभिभावकों और शैक्षणिक संस्थानों द्वारा बच्चों को शिक्षित करने का उद्देश्य सिर्फ अच्छी नौकरी पाना और अधिक से अधिक धन कमाना बनता जा रहा है ?
5. क्या आधुनिक शिक्षण पद्धतियों के बढ़ते प्रभाव के कारण पारंपरिक शिक्षण पद्धतियाँ विलुप्त हो रही हैं ?
6. क्या आधुनिक भारत के बदलते सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में आधुनिकीकरण के कारण विद्यार्थियों के शैक्षणिक जीवन में नैतिक मूल्यों का ग्राफ निरंतर गिर रहा है ?
7. क्या पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव विद्यार्थियों के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है ?
8. क्या वर्तमान समय में विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों की कमी होने के कारण उनमें सहनशक्ति का अभाव बढ़ता जा रहा है ?
9. क्या समकालीन भारतीय समाज में विद्यार्थियों द्वारा सोशल साइट्स की लत और दुरुपयोग के कारण उनके नैतिक मूल्य प्रभावित हो रहे हैं ?
10. क्या राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यार्थियों के जीवन में नैतिक मूल्यों को पुर्नस्थापित करने का एक सुदृढ़ प्रयास है ?

तलिका : गुणात्मक आंकड़ों के लिए चयनित 150 प्रतिभागियों का वर्गीकरण

आयु समूह (वर्ष में)	प्रतिभागियों की संख्या	लिंग		निवास स्थान		प्रश्नों के उत्तर		
		पुरुष	महिला	दिल्ली	गाजियाबाद	हाँ	नहीं	पता नहीं
19 वर्ष से 39 वर्ष	52	24	28	25	27	456	26	38
40 वर्ष से 60 वर्ष	54	22	32	25	29	468	30	42
60 वर्ष से अधिक	44	24	20	19	25	386	23	31
कुल योग	**150**	**70**	**80**	**69**	**81**	**1310**	**79**	**111**
		150		**150**		**1500**		

गुणात्मक आंकड़ों का विश्लेषण –

प्रस्तुत विषय पर अध्ययन के लिए निर्धारित किए गए 10 प्रश्नों पर 150 उत्तरदाताओं से एकत्र किए गए आंकड़ों का विश्लेषण इस प्रकार है :–

तालिका : 10 प्रश्नों की आवृत्ति और प्रतिशत का संयुक्त एवं संक्षिप्त विवरण

प्रश्न संख्या	आवृत्ति			प्रतिशत		
	हाँ	नहीं	पता नहीं	हाँ	नहीं	पता नहीं
प्रश्न 1	136	8	6	90.67	5.33	4.00
प्रश्न 2	138	6	6	92.00	4.00	4.00
प्रश्न 3	120	10	20	80.00	6.67	13.33
प्रश्न 4	137	8	5	91.34	5.33	3.33
प्रश्न 5	130	7	13	86.67	4.67	8.66
प्रश्न 6	126	9	15	84.00	6.00	10.00
प्रश्न 7	119	8	23	79.33	5.33	15.34
प्रश्न 8	131	6	13	87.33	4.00	8.67
प्रश्न 9	133	10	7	88.67	6.67	4.66
प्रश्न 10	140	7	3	93.33	4.67	2.00
कुल योग	**1310**	**79**	**111**			
			1500			

5. कुछ उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण

साक्षात्कार के दौरान हुई चर्चा में उत्तरदाताओं द्वारा नैतिक शिक्षा के संबंध में महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए गए जिनमें से कुछ निम्न प्रकार हैं :–

उत्तरदाता 1 – यह एक 18 वर्षीय महिला का दृष्टिकोण है, जो दिल्ली में रहती है और एक विधार्थी है। उनका मानना है कि स्थिर और सुखी जीवन के लिए नैतिक शिक्षा महत्वपूर्ण है।

उत्तरदाता 2 – यह एक 57 वर्षीय पुरुष का दृष्टिकोण है, जो गाजियाबाद में रहते हैं और एक कारपेंटर हैं। उनका मानना है कि आज शिक्षा भी व्यक्ति को नैतिक नहीं बना पा रही है। अतः सरकार को नैतिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए ठोस एवं कठोर कदम उठाने चाहिए।

उत्तरदाता 3 – यह एक 43 वर्षीय पुरुष का दृष्टिकोण है, जो गाजियाबाद में रहते हैं और एक वकील हैं। उनका मानना है कि शिक्षा अच्छी नौकरी पाने के लिए जरूरी है जो कि समाज व्यवस्था के अनुरूप हो लेकिन विद्यार्थियों को एक अच्छा इंसान बनाने के लिए नैतिक शिक्षा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है इसलिए परिवार, विद्यालय, सरकार और गैर सरकारी संगठनों सभी का यह दायित्व है कि बच्चों को बचपन से ही शिष्टाचार के नियम बताएं और नैतिक शिक्षा दें।

उत्तरदाता 4 – यह एक 50 वर्षीय पुरुष का दृष्टिकोण है, जो गाजियाबाद में रहते हैं और एक निजी कंपनी में मैनेजर हैं। उनका मानना है कि शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि छात्र सभ्य नागरिक भी बने, सद्मार्ग पर चलें और धन भी कमाएँ।

उत्तरदाता 5 – यह एक 51 वर्षीय महिला का दृष्टिकोण है, जो दिल्ली में रहती है और एक सरकारी स्कूल की प्रधानाध्यापिका है। उनका मानना है कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को अच्छा व्यक्ति बनाकर अच्छे समाज का निर्माण करना है। इसके विपरीत समाज में कुछ व्यक्ति शिक्षा का दुरुपयोग कर रहे हैं जैसेकि साइबर अपराधी सीधे सादे लोगों को ठग रहे हैं, यहाँ तक कि शिक्षित और सफल पेशेवर व्यक्ति भी उनके चंगुल में फंस जाते हैं। राजनीति में अपराधी और बाहुबली प्रवृत्ति के लोग ही विजयी हो रहे हैं। युवा आधुनिक दिखने की चाहत में अपनी संस्कृति से दूर हो रहे हैं। अतः ज्ञान विज्ञान की शिक्षा के साथ ही बच्चों को नैतिकता का पाठ पढ़ाना भी जरूरी है। हमें बच्चों को अपनी स्वदेशी संस्कृति और परिधानों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और हमें स्वयं उनका आदर्श बनना चाहिए।

उत्तरदाता 6 – यह एक 78 वर्षीय पुरुष का दृष्टिकोण है, जो गाजियाबाद में रहते हैं और एक अवकाश प्राप्त सरकारी कर्मचारी हैं। उनका मानना है कि हमारा प्राथमिक उद्देश्य अपने बच्चों को अच्छे संस्कार, उच्च व्यक्तित्व एवं देश और समाज के उत्थान के लिए शिक्षित करना होना चाहिए।

उत्तरदाता 7 – यह एक 68 वर्षीय महिला का दृष्टिकोण है, जो गाजियाबाद में रहती है और एक गृहिणी है। उनका मानना है कि शिक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए कि शिक्षा द्वारा बच्चे संस्कारी और स्वावलम्बी बने।

उत्तरदाता 8 – यह एक 71 वर्षीय महिला का दृष्टिकोण है, जो दिल्ली में रहती है और एक गृहिणी है। उनका मानना है कि शिक्षा व अच्छी नौकरी आज की जरुरत है, लेकिन इसके साथ–साथ संस्कारी व अच्छा व्यक्ति होना उतना ही आवश्यक है।

उत्तरदाता 9 – यह एक 62 वर्षीय महिला का दृष्टिकोण है, जो दिल्ली में रहती है और एक अवकाश प्राप्त अध्यापिका है। उनका मानना है कि शिक्षा बच्चों के लिए एक ऐसा माध्यम है जो उन्हें व्यवसाय चुनने में सहायक होती है तथा उपयुक्त जीवन साथी चुनने में भी मदद करती है। साथ ही नैतिक शिक्षा व्यक्ति को समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करने में सहायक होती है।

उत्तरदाता 10 – यह एक 61 वर्षीय पुरुष का दृष्टिकोण है, जो गाजियाबाद में रहते हैं और एक कारोबारी हैं। उनका मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना नही होता है बल्कि शिक्षा के माध्यम से धनोपार्जन के साथ–साथ अपने ज्ञान, सम्मान और पारिवारिक मूल्यों में भी वृद्धि की जा सकती है।

कुल मिलाकर, विश्लेषण से पता चलता है कि विभिन्न आयु वर्ग के 150 उत्तरदाताओं से उपरोक्त 10 प्रश्नों पर उनकी राय ली गई, जिसमें से अधिकांश उत्तरदाता इस बात से सहमत थे कि वर्तमान शैक्षणिक संस्थाओं का बदला हुआ स्वरूप विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों को प्रभावित कर रहा है। परिवार तथा विद्यालय दोनों ही विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा देने पर कम ध्यान दे रहे हैं। समकालीन समाज में अभिभावक और शैक्षणिक संस्थान दोनों का उद्देश्य बच्चों को उच्च नौकरियां प्राप्त करने के लिए शिक्षित करना हो गया है। इसी कारण बच्चों को नैतिकता संबंधी ज्ञान देने में परिवार और विद्यालय दोनों की भूमिका कम होती जा रही है। आधुनिकीकरण और पश्चिमी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण हमारी पारंपरिक शिक्षण पद्धतियां विलुप्त हो रही हैं। विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों की कमी होने के कारण उनमें सहनशक्ति का अभाव और अशिष्टता बढ़ती जा रही है। विद्यार्थियों द्वारा सोशल साइट्स की लत और दुरुपयोग के कारण भी विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य प्रभावित हो रहे हैं। काफी उत्तरदाताओं को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बारे में जानकारी नहीं थी। जब उन्हें एन° ई° पी° 2020 के प्रकल्पों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई तो सभी उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया कि यह नीति विद्यार्थियों के जीवन में नैतिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करने, उनके नैतिक चरित्र निर्माण और भारतीय संस्कृति को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

6. परिणाम और चर्चा –

प्रस्तुत शोध विषय पर प्राथमिक एवं सहायक आंकड़ों के अध्ययन से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से विद्यार्थियों के जीवन में नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारणों और प्रभावों को निम्नलिखित बिंदुओं के द्वारा समझा जा सकता है :–

• आधुनिकता और पश्चिमी संस्कृति का विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर प्रभाव –

समकालीन भारतीय समाज में विद्यार्थियों के जीवन में पारंपरिक नैतिक मूल्यों का क्षरण आधुनिकता और पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव का एक प्रमुख परिणाम रहा है। आधुनिक भारत में जींस, टी–शर्ट, अंग प्रदर्शन, फास्ट–फूड, डिस्को, पॉप म्यूजिक, क्लब, नेट पर चौटिंग इत्यादि तत्वों से बनी एक संकर संस्कृति सृजित हुई है, जिससे युवा विद्यार्थी बहुत अधिक प्रभावित हो रहे हैं। पाश्चात्य देशों में प्रचलित विलासिता के साधन, वस्तुएँ, अश्लील साहित्य और पॉर्न फिल्मों का भारतीय समाज में निर्बाध प्रवेश हो गया है जिसके कारण हमारे विद्यार्थियों के जीवन में नैतिक मूल्यों के पतन का खतरा बढ़ता जा रहा है। पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति से दूर कर रहा है। हमारे समाज में पीढ़ियों से चली आ रही नैतिक शिक्षाएं और मूल्य प्रणालियां धीरे–धीरे कमजोर हो रही हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति ने विद्यार्थियों को अधिक से अधिक भौतिक वस्तुओं और सुख–सुविधाओं की ओर आकर्षित किया है। इसके परिणामस्वरुप विद्यार्थी प्रारंभ से ही नैतिक मूल्यों की तुलना में आर्थिक सफलता को अधिक महत्व देने लगते हैं। आधुनिकता की चकाचौंध में शराब व दूसरे ड्रग्स का सेवन करने वालों में विद्यार्थियों की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। विद्यार्थियों का बड़ी संख्या में नशे की लत का शिकार होना आज की भ्रामक एवं संस्कार विहिन आधुनिकता का परिणाम है।

• आधुनिक शिक्षण संस्थान और शिक्षा प्रणाली का विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर प्रभाव –

वर्तमान शिक्षण संस्थान और शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों के जीवन में नैतिक मूल्यों को स्थापित और सुदृढ़ करने में कमजोर हो रहे हैं। वर्तमान समय में विद्यार्थियों द्वारा व्यवसायिक और आर्थिक उपलब्धि को अधिक महत्त्व दिया जा रहा है। अभिभावकों और स्वयं विद्यार्थियों की बढ़ती महत्वकांक्षाएं तथा निजी शैक्षणिक संस्थानों का बढ़ता लालच, वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा को महत्त्व नहीं दिए जाने का एक प्रमुख कारण है। निजी शिक्षण संस्थानों में अंग्रेजी भाषा, गणित, विज्ञान और अन्य पेशेवर पाठ्यक्रमों पर अधिक जोर दिया जा रहा है। मानवीय मूल्यों पर आधारित नैतिक शिक्षा को बहुत कम महत्व दिया जाता है। उच्च शिक्षा और रोजगार में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण विद्यार्थियों पर अपनी क्षमता से अधिक पढ़ने का दबाव बढ़ता जा रहा है। निजी स्कूलों में मोटी फीस देकर बच्चों को इंग्लिश मीडियम से पढ़ाने के प्रति जैसा लगाव विगत कुछ दशकों से देखा जा रहा है, वैसा पहले नहीं देखा गया था। इस प्रकार लोगों की बढ़ती आकाक्षाएँ, शिक्षण संस्थानों का बढ़ता लालच तथा शिक्षकों, अभिभावकों एवं छात्रों का बदलता व्यवहार, विद्यार्थियों के शैक्षणिक जीवन में नैतिक मूल्यों को कम कर रहा है।

- **मीडिया और सोशल साइट्स का विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर प्रभाव –**

आधुनिक युग में मीडिया और सोशल साइट्स का प्रभाव विद्यार्थियों के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर देखा जा सकता है। मीडिया और सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर भी पढ़ रहा है। आज सोशल मीडिया, इंटरनेट और मनोरंजन उद्योग ऐसे मूल्यों और व्यवहारों को प्रोत्साहित कर रहे हैं जो पारंपरिक नैतिक मानदंडों के विपरीत है। अश्लीलता, हिंसा और अनैतिक कृत्य अक्सर मीडिया में देखे जा सकते हैं जो विशेष रूप से युवा विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं। विद्यार्थी अपनी जीवन शैली और पहनावे को उसी प्रकार बनाने की कोशिश करते हैं जिस प्रकार की जीवन शैली और पहनावा वह सिनेमा और धारावाहिकों में देखते हैं।

वर्तमान समय में सोशल मीडिया का प्रयोग विद्यार्थियों द्वारा व्यापक स्तर पर किया जा रहा है। एक ओर इंटरनेट और सोशल मीडिया ने विद्यार्थियों के लिए शिक्षा प्राप्त करने का नया मार्ग प्रशस्त किया है तो दूसरी ओर यह विद्यार्थियों को उनके लक्ष्यों और नैतिक मूल्यों से भटकाने का भी कार्य कर रहा है। आज विद्यार्थी सोशल नेटवर्किंग की अनेक साइट्स का उपयोग करते हैं, जैसेकि यूट्यूब, फेसबुक, व्हाट्सएप, एक्स, टेलीग्राम, इंस्टाग्राम, ऑडियो, विडियो, चैटिंग, ब्लॉगिंग इत्यादि। विद्यार्थियों का एक बड़ा वर्ग सिर्फ मनोरंजन के लिए मोबाइल स्क्रोल करने में और गेम्स खेलने में पूरा दिन गुजार देता है। सोशल मीडिया एवं इंटरनेट की लत की वजह से विद्यार्थियों की स्कूल की पढ़ाई–लिखाई, व्यवहार, आदतें और नींद तक प्रभावित हो रही है। सोशल साइट्स के गलत उपयोग से विद्यार्थियों के जीवन में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है।

- **भारत में नैतिक शिक्षा को पुनर्स्थापित करने में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका –**

शिक्षा की पहुँच सभी बच्चों तक सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार द्वारा निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में पारित किया गया जिसे 1 अप्रैल, 2010 को पूरे देश में लागू किया गया। अनेक शिक्षाशास्त्रियों और विभिन्न शैक्षणिक संगठनों द्वारा नैतिक शिक्षा के प्रशिक्षण के लिए सरकारी पहल करने का सुझाव दिया गया। यह कहा गया कि ऐसी शिक्षण प्रक्रिया की जरूरत है जो शिक्षार्थी केंद्रित हो, सक्षम बनाने वाली और रुचिपूर्ण हो। पाठ्यक्रम में विज्ञान और गणित के अलावा बुनियादी कला, शिल्प, मानविकी, खेल, भाषाओं, साहित्य, संस्कृति और मूल्य का अवश्य ही समावेश किया जाए। शिक्षा से चरित्र निर्माण होना चाहिए, शिक्षार्थियों में नैतिकता, तार्किकता, करुणा और संवेदनशीलता विकसित करनी चाहिए और साथ ही रोजगार के लिए सक्षम बनाना चाहिए। (एन° ई° पी° 2020, परिचय, पृष्ठ – 4)

प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में वर्ष 2020 में भारत सरकार द्वारा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का निर्माण किया गया। इस नीति के द्वारा भारत में नैतिक शिक्षा को पुनर्स्थापित करने का भरपूर प्रयास किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21 वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। यह नीति भारत की परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों को बरकरार रखते हुए, 21वीं सदी की शिक्षा के लिए आकांक्षात्मक लक्ष्यों, जिनमें सतत विकास लक्ष्य शामिल हैं, के संयोजन में शिक्षा व्यवस्था, उसके नियमन और गवर्नेंस सहित, सभी पक्षों के सुधार और पुनर्गठन का प्रस्ताव रखती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर विशेष जोर देती है। यह नीति इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा से न केवल साक्षरता का विकास होना चाहिए बल्कि नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना आवश्यक है। (एन° ई° पी° 2020, परिचय, पृष्ठ – 4)

- **एन° ई° पी° 2020 का आधार सिद्धांत –**

शैक्षिक प्रणाली का उद्देश्य अच्छे इंसानों का विकास करना है– जो तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम हो, जिसमें करुणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मक कल्पनाशक्ति, नैतिक मूल्य और आधार हों। इसका उद्देश्य ऐसे उत्पादक लोगों को तैयार करना है जोकि अपने संविधान द्वारा परिकल्पित–समावेशी और बहुलतावादी समाज के निर्माण में बेहतर तरीके से योगदान करे। (एन° ई° पी° 2020, पृष्ठ – 6)

- **एन° ई° पी° 2020 के तहत प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का प्रावधान (ई सी सी ई) –**

नई शिक्षा नीति 2020 में बच्चों की 3 वर्ष की आयु से प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई सी सी ई) का एक मजबूत आधार शामिल किया गया है जिसका उद्देश्य बच्चों के सर्वांगीण विकास और कल्याण को बढ़ावा देना है। एन° ई° पी° के अनुसार बच्चों के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष की अवस्था से पूर्व ही हो जाता है। बच्चों के मस्तिष्क के उचित विकास और शारीरिक वृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए उसके आरंभिक 6 वर्षों को महत्वपूर्ण माना जाता है। इसलिए प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास, देखभाल के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सार्वभौमिक प्रावधान को जल्द से जल्द, निश्चय ही वर्ष 2030 से पूर्व, उपलब्ध किया जाना चाहिए, ताकि पहली कक्षा में प्रवेश पाने वाले सभी बच्चे स्कूली शिक्षा के लिए पूरी तरह से तैयार हो जाएँ। (एन° ई° पी° 2020, बिंदु 1.1, पृष्ठ – 9)

ई सी सी ई में मुख्य रूप से लचीली, बहुआयामी, बहु–स्तरीय, खेल–आधारित, गतिविधि–आधारित और खोज–आधारित शिक्षा को शामिल किया गया है। ई सी सी ई का समग्र उद्देश्य बच्चों का शारीरिक–भौतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, समाज–संवेगात्मक–नैतिक विकास, सांस्कृतिक विकास, संवाद के लिए प्रारंभिक भाषा, साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के विकास में अधिकतम परिणामों को प्राप्त करना है। (एन° ई° पी° 2020, बिंदु 1.2, पृष्ठ – 9)

- **एन° ई° पी° 2020 में विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण संबंधी प्रावधानों का समावेशन –**

एन° ई° पी° 2020 में विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण संबंधी नैतिक मूल्यों को विशेष महत्व दिया गया है। यह नीति कहती है कि विद्यार्थियों को कम उम्र में "सही को करने" के महत्व को सिखाया जाएगा और नैतिक निर्णय लेने के लिए एक तार्किक ढांचा दिया जाएगा। बाद के वर्षों में, इन मुद्दों को विभिन्न थीम जैसे धोखाधड़ी, हिंसा, साहित्यिक चोरी, गंदगी फैलाना, सहिष्णुता, समानता, समानुभूति इत्यादि की मदद से विस्तार दिया जाएगा जिसमें बच्चों को अपने जीवन का संचालन करने में नैतिक मूल्यों को अपनाने के लिए सक्षम बनाने, कई दृष्टिकोणों से एक नैतिक मुद्दे के बारे में तर्क गढ़ने और निर्णय लेने और सभी कार्यों में नैतिक आचरण को अपनाने में सक्षम बनाने पर जोर दिया जाएगा। इस तरह विकसित हुए नैतिक बोध के चलते पारंपरिक भारतीय मूल्यों और सभी बुनियादी मानवीय और संवैधानिक मूल्यों (जैसे सेवा, अहिंसा, स्वच्छता, सत्य, निष्काम–कर्म, शांति, त्याग, सहिष्णुता, विविधता, बहुलवाद, नैतिक–आचरण, लैंगिक संवेदनशीलता, बुजुर्गों के लिए सम्मान, सभी लोगों और उनकी अंतर्निहित क्षमताओं का सम्मान, पर्यावरण के प्रति सम्मान, मदद करना, शिष्टाचार, धैर्य, क्षमा, समानुभूति, करुणा, देशभक्ति, लोकतांत्रिक दृष्टिकोण, अखंडता, जिम्मेदारी, न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व) को विद्यार्थियों में विकसित किया जा सकेगा। साथ ही साथ शराब, तम्बाकू और अन्य मादक पदार्थों के हानिकारक और विपरीत प्रभावों की वैज्ञानिक व्याख्या को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा। (एन° ई° पी° 2020, बिंदु 4.28, पृष्ठ – 24) इस प्रकार भारत में नैतिक शिक्षा को पुनर्स्थापित करने में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की महत्वपूर्ण भूमिका है।

7. विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के उत्थान हेतु महत्वपूर्ण सुझाव –

शिक्षकों तथा अभिभावकों का व्यवहार और जीवन शैली विद्यार्थियों के चरित्र की नींव होते हैं। उनका जीवन बच्चों के लिए आदर्श होता है।

- **शिक्षकों के लिए सुझाव –**

शिक्षकों को चाहिए कि छात्रों में नैतिक मूल्यों की एक मजबूत नींव को बढ़ावा देने के लिए पाठ्यक्रम के भीतर ही नैतिक शिक्षा को एकीकृत करें। शिक्षकों को समाज में नैतिक अखंडता को बनाए रखने के लिए विद्यार्थियों में सामुदायिक जुड़ाव को प्रोत्साहित करना चाहिए और इसके लिए विद्यालय में अंतर पीढ़ीगत संवाद कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए, जिससे युवा और वरिष्ठ लोग नैतिक मूल्यों पर दृष्टिकोण साझा कर सकें।

शिक्षकों को विद्यार्थियों के विकास और कल्याण में वास्तविक रुचि रखनी चाहिए। उन्हें विद्यार्थियों के प्रति उचित समझ और करुणा रखनी चाहिए। शिक्षकों को विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के उत्थान हेतु अपने स्वयं के व्यवहार का आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। शिक्षकों को सभी विद्यार्थियों के साथ निष्पक्षतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए और सभी के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने चाहिए। विद्यार्थियों के साथ चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी शांत व्यवहार बनाए रखना चाहिए। पूर्वाग्रहों से ग्रसित होकर किसी भी छात्र के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार नहीं करना चाहिए।

शिक्षा का उद्देश्य केवल तकनीकी ज्ञान और जानकारी प्रदान करना ही नहीं बल्कि नैतिक रूप से जागरूक और जिम्मेदार नागरिक तैयार करना भी है। इसके लिए विद्यालयों में चरित्र निर्माण और नैतिक मुद्दों पर गहराई से सोचने के लिए निरंतर नैतिक शिक्षा कार्यक्रम होने चाहिए। जब शिक्षा प्रणाली में नैतिकता की कमी होती है, तो इसका प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता है और वे सही–गलत का भेद समझने में असमर्थ रहते हैं। नैतिकता की कमी से विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता और अनैतिक गतिविधियों की प्रवृत्ति बढ़ जाती है।

शिक्षा प्रणाली नैतिकता के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षकों को नैतिक शिक्षा को विद्यालयों और कॉलेजों के पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहिए। नैतिक शिक्षा के माध्यम से बच्चों को सही और गलत के बीच भेद करना सिखाना चाहिए। शिक्षकों को भी नैतिकता के महत्व को समझाना चाहिए और उन्हें बच्चों के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। इसके अलावा, नैतिक शिक्षा के साथ–साथ व्यवहारिक प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिए ताकि बच्चे नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में लागू कर सकें।

- **अभिभावकों के लिए सुझाव –**

आधुनिकता के वर्तमान दौर में परिवारों में पालन–पोषण के बदलते रुझान ने भी विद्यार्थियों के नैतिक पतन में योगदान दिया है। आज की महंगी जीवन शैली और आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए माता–पिता दोनों काम पर जाते हैं। विद्यार्थियों में असहनशीलता और अशिष्टता पैदा होने का एक प्रमुख कारण माता–पिता के पास समय का अभाव होना है। नैतिक संस्कार तो बच्चा सर्वप्रथम पारिवारिक माहौल में ही सीखता है। अभिभावकों को अपने बच्चों के लिए पर्याप्त समय निकाल कर परवरिश के प्रारंभ से ही समझाना चाहिए कि नैतिकता, शिष्टाचार और संस्कार क्या होते हैं। हर विद्यार्थी के शारीरिक और मानसिक विकास को बचपन से ही सुधारने एवं संवारने की जिम्मेदारी माता–पिता और शिक्षकों दोनों पर समान रूप से है। सिर्फ बड़े और नामी–गिरामी स्कूल में दाखिला दिला देने भर से माता–पिता की जिम्मेदारी समाप्त नहीं हो जाती है।

सदैव पुरानी पीढ़ी ही नई पीढ़ी को संस्कारों का हस्तांतरण करती है इसलिए जरूरी है कि अभिभावक स्वयं भी अपने आचरण में नैतिकता को महत्व दे और नई पीढ़ी को उचित मार्गदर्शन से संभाले। अभिभावक स्वयं भी अपने माता–पिता का सम्मान करें और अपने जीवन में स्वदेशी संस्कृति का अनुसरण

करके अपने बच्चों के प्रेरणास्त्रोत बने। यह बेहद जरूरी है कि अभिभावक अपनी अगली पीढ़ी को हर रिश्ते की कद्र करना सिखाए। स्त्री–पुरुष के रिश्तों के बारे में भी बच्चों को यथासंभव संपूर्ण जानकारी माता–पिता स्वयं ही दे ताकि जिज्ञासा में बच्चे अन्य स्त्रोतों से मिली गलत जानकारी के शिकार नहीं हों।

आधुनिक भारत के वर्तमान परिवेश में माता–पिता अपने बच्चों से बहुत अधिक अपेक्षाएं रखते है। हर माता–पिता यह चाहता है कि उनका बच्चा उनसे ज्यादा तरक्की करे। लेकिन अभिभावकों को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वे अपने सपने को पूरा करने के लिए अपने बच्चों पर दबाव नहीं डालें। आज भौतिकता की अंधी दौड़ में बच्चों को अधिक से अधिक धन कमाने और उच्च पद प्राप्त करने की कला सिखाई जाती है। सिर्फ समर्थ और धनवान अभिभावक ही नहीं, गरीब से गरीब माता–पिता भी दिन–रात मेहनत करते हैं और यही इच्छा रखते हैं कि उनका बच्चा अंग्रेजी स्कूल में पढ़कर अच्छे पद पर पहुँचे तथा सुखी एवं संपन्न जीवन व्यतीत करे। इसी कारण विद्यार्थियों को स्कूल में ज्यादा नंबर लाने और प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफल होने का तनाव झेलना पड़ रहा है जिसके कारण विद्यार्थी कई बार गलत निर्णय ले लेते हैं। अभिभावकों को चाहिए कि बच्चों को उनकी इच्छानुसार कैरियर चुनने दें, उनसे मित्रतापूर्ण व्यवहार करें और उनकी समस्याओं को सुलझाने में उनकी मदद करें।

आजकल इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स और मोबाइल ऐप्स ने शिक्षा और सीखने के तरीकों को बदल दिया है। विद्यार्थी किताबों से ज्यादा इंटरनेट से ज्ञान बटोरना सही और आसान समझते हैं। ऐसा करने से विद्यार्थियों की स्वयं की रचनात्मक शक्ति प्रभावित हो रही है। कंप्यूटर, स्मार्टफोन, टी°वी°, लैपटॉप और टैबलेट पर बहुत अधिक समय बिताने से विद्यार्थियों की आँखों और स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव हो रहा है तथा विद्यार्थियों में सामाजिक मेलजोल और व्यवहार संबंधी समस्याएं भी पैदा हो रही है। विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों को दूर करने के लिए अभिभावकों द्वारा सीमाएँ निर्धारित की जा सकती हैं। अभिभावकों को चाहिए कि अपने बच्चों के सोशल मीडिया उपयोग की निगरानी करें और इस बात से अवगत रहें कि वे किस प्रकार की वेबसाइटों पर जा रहे हैं तथा कौन से ऑनलाइन गेम्स खेल रहे हैं। अनुपयुक्त वेबसाइटों और एप्स को ब्लॉक करने के लिए कंप्यूटर, लैपटॉप, स्मार्टफोन और टैबलेट पर अभिभावकीय नियंत्रण होना चाहिए। अभिभावकों को कंप्यूटर, लैपटॉप और टी°वी° को अपने ही कमरे में रखने का प्रयास करना चाहिए ताकि बच्चों के प्रौद्योगिकी उपयोग की निगरानी कर सके।

अभिभावकों का नैतिक कर्तव्य है कि अपने बच्चों को पर्याप्त समय और प्यार दें। जो नैतिक संस्कार बच्चों को माता–पिता और परिवार से मिलते हैं वह किसी दूसरे से नहीं मिल सकते। अभिभावक अपने बच्चों को व्यावसायिक और प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करने वाली गणित, विज्ञान और सामान्य ज्ञान की पुस्तकों के साथ–साथ नैतिक शिक्षा, पंचतंत्र, महापुरुषों की जीवनी और शिक्षाप्रद कहानियों की पुस्तकें भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें जिससे बच्चे बचपन से ही नैतिकता और शिष्टाचार को आत्मसात करें।

8. निष्कर्ष –

विद्यार्थी देश का भविष्य होते हैं। देश के उज्जवल भविष्य के लिए विद्यार्थियों को बचपन से ही नैतिक मूल्यों की शिक्षा देना अभिभावकों, अध्यापकों, समाज के विभिन्न संगठनों और सरकारी तंत्र सभी की जिम्मेदारी है। भारत में नैतिक शिक्षा को पुनर्जीवित करने में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह नीति विद्यार्थियों की सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक क्षमताओं को विकसित करने पर जोर देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य शिक्षा प्रणाली में सुधार लाकर युवाओं और नागरिकों के बीच नैतिक मूल्यों, मानवीय और संवैधानिक मूल्यों को बढ़ावा देना है। एन° ई° पी° 2020 शिक्षा के सभी स्तरों पर मूल्यों पर आधारित शिक्षा को मुख्य पाठ्यक्रम में एकीकृत करने की आवश्यकता पर जोर देती है। इस नीति का यह मानना है कि शिक्षा को न केवल अकादमिक उत्कृष्टता पर बल्कि छात्रों के नैतिक मूल्यों को विकसित करने पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए। एन° ई° पी° 2020 पाठ्यक्रम की रूपरेखा में छात्रों को नैतिक मूल्यों के वास्तविक निहितार्थों को समझाने का प्रस्ताव करती है जिससे छात्र अपने जीवन में नैतिक मूल्यों को सहज रूप से आत्मसात कर सकें। एन° ई° पी° 2020 में छात्रों को नैतिक शिक्षा को प्रभावी ढंग से प्रदान करने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करने हेतु शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की स्थापना का भी प्रस्ताव है, जो मानव अधिकारों, लोकतांत्रिक मूल्यों, लैंगिक समानता और मूल्य शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करते हैं। एन° ई° पी° 2020 छात्रों में नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण सुधारों का प्रस्ताव करती है ताकि छात्र नैतिक और जिम्मेदार नागरिक बनकर समाज में सकारात्मक योगदान दे सकें। एन० ई० पी० 2020 का सही अर्थों में अनुपालन समाज में विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के ह्रास को रोकने और उनके पुनरुत्थान में मील का पत्थर साबित होगा।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

संदर्भ ग्रंथ सूची –

चावला, राजेश. 2023. *सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव.* राधाकमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा. पृष्ठ संख्या 140–145.

राजपूत, एस. के. 2023. *मोरल वैल्यूज आर डाईंग आउट अमंग इंडियन युथ.* इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन साइंस, कम्युनिकेशन एंड टेक्नोलॉजी. 03(01). पृष्ठ संख्या 65–69.

ढोले, एम. वी., वासडे, डी. एवं भोंगाडे, डॉ. डी. एस. 2022. *इम्पैक्ट ऑफ मोरल वैल्यूज इन द डेवलपमेंट ऑफ स्टूडेंट्स लाइफ इन मॉडर्न एरा.* इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करंट इंजीनियरिंग एंड साइंटिफिक रिसर्च. 09(11). पृष्ठ संख्या 27–29.

बंसल, पी. 2022. *रिजन्स एंड सोलूशन्स फॉर द डेटीरियोरेशन ऑफ वैल्यूज एजुकेशन इन सोसाइटी.* इंटरनेशनल कांफ्रेंस आन कंटेम्पररी चौलेंजेज इन मैनेजमेंट एजुकेशन इंजीनियरिंग एंड एप्लाइड साइंसेज. पृष्ठ संख्या 245–252.

सिंह, डॉ. के. ए. 2020. *डिमिनिशिंग ऑफ मोरल वैल्यूज अमंग इंडियन यूथ्स.* इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च कल्चर सोसाइटी. 4(5). पृष्ठ संख्या 239–242.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* भारत सरकार.

सिंह, सुरेन्द्र. पाल. एवं कुमार, संजीव. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा.* शोध समागम. 03(04). पृष्ठ संख्या 1270–1275.

भक्त, डी. के. 2017. *डिग्रडेशन ऑफ मोरल वैल्यूज अमंग यंग जनरेशन : ए कंटेम्पोरि इशू इन इंडिया.* इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी एडं मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज. 03(5). पृष्ठ संख्या 128–133.

दवे, अमित. कुमार. एवं दवे, पूनम. 2014. *मूल्य शिक्षा की आवश्यकता.* भारतीय आधुनिक शिक्षा. पृष्ठ संख्या 5–9.